

— 3) *aufsuchen*: पृथगे देवेभ्यो वस्यो अचैत् RV. 6, 44, 7. *suchen, forschen nach, Nachforschungen anstellen*: कनकपुरो चिन्वन् KATHAS. 26, 136. राज्ञः प्रवृत्तिं चिन्वन्तः VID. 27. *durchsuchen*: (अस्माकम्) त्रिभुवनमिदं चिन्वताम् BHART. 3, 82. पुराष्टाणि चिन्वन्तो नैषधम् in Städten und Reichen N. *suchend* MBH. 3, 2639. — Vgl. 4. चित्.

— अन्नु *gedenken, sich erinnern*: अन्नु स्वधा चिकित्तां सोमो अग्निः AV. 6, 53, 1.

— अय 1) *Rücksicht nehmen auf, respectiren*: ब्रह्म चापं चिकीहि नः AV. 1, 10, 4. अयचित (vgl. 4. चि mit अय) adj. *geehrt, geachtet* P. 7, 2, 30. AK. 3, 2, 51. H. 447. CAT. Br. 3, 4, 1, 3, 4, 6. MBH. 3, 10835. BHART. 9, 22. अन्स्वी च रथो चार्तिथीनामपचिततमौ TS. 5, 2, 2, 3. अनपचित LAT. 9, 10, 2. अयचित n. *das Ehren, Achten*: करिष्यति — अयचितं मम MBH. 9, 3620. Vgl. अयचायिन् *achtend in* गुरुवद्वापचायिन् (falsch aufgefasst in den Verbess. zum 1sten Theile u. उपचायिन्) MBH. 13, 6705. — 2) *Jmd ehrerbietig zu sich laden*: स्वयं नार्पचित एवतेरवदिहोपलक्षितः BHAG. P. 5, 3, 9. — Die Bed. *abrechnen, vergelten* hat sich in अयचिति erhalten.

— अय *verehren, hochachten* (West.: *comprehendere*): यथा वाचमचिन्वन्ति सन्तः MBH. 3, 10676. Dafür fälschlich अविचि° 10677.

— उप *dass.*, vgl. उपचायिन् *ehrend in* श्रेष्ठाय° MBH. 4, 595. 14, 2198.

— नि *wahrnehmen, bemerken*: कुरी इन्द्रस्य नि चिक्राय कः स्विन्तु RV. 10, 114, 9, 2. 124, 9. 1, 164, 38 (vgl. P. 6, 1, 35). यः सोमया निचितो वज्रवाङ्मः 2, 12, 13. विद्या निचिक्रात् 4, 38, 4. AV. 5, 20, 12. विश्वं कुरु निचिक्रायै हुग्धम् 4, 10, 2. वि चिन्मिषता निचिरा नि चिक्रायुः RV. 8, 23, 9. नि कृतुना जनानां चिक्रायै 5, 66, 4. ते निचिक्रायुर्ब्रह्म पुराणमग्र्यम् *bemerkten, erkennen* CAT. Br. 14, 7, 2, 21. — *desid. beobachten, überwachen*: स मनुं मर्त्यानामर्द्धे नि चिक्रीषते । पुरा निदञ्चिक्रीषते RV. 8, 67, 6. अग्निं संधस्थै मकृति चतुषा नि चिक्रीषते VS. 11, 18. — Vgl. निचिर, निचेतर.

— निम् *über Etwas Gewissheit erlangen, entscheiden, als ausgemacht ansehen, festsetzen, beschliessen*: तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयो ऽकृमाप्नुयाम् BHAG. 3, 2. निश्चित्य सचिवैः सार्धं यैवराज्यमन्यत R. 2, 1, 26. इति निश्चित्य HIT. 20, 17. PANKAT. 33, 11. एवं निश्चित्य मनसा R. 1, 37, 9. MBH. 3, 2779. निश्चित्यार्थविनिश्चयम् 3, 7013. निश्चित्य मन्त्रिभिर्मन्त्रनिश्चयम् R. 1, 8, 22. इदं निश्चिन्नु विप्रेन्द्र एक एव भवान्यहम् । वामुदेवो जगत्यस्मिन् HARIV. 13061. गुणदोषावनिश्चित्य HIT. II, 137. आत्मनस्तत्र निश्चित्य विपत्तिम् RAGA-TAR. 3, 124. संत्रासमभिलाषं वा निश्चिक्राय न कश्च न 4, 174. CIG. 8, 29. एकश्रुतधर्त्वेन मां निश्चित्य *sich überzeugt habend, dass ich das Einmalgehörte behielte*, KATHAS. 2, 40. न च निश्चिक्राय चन्द्रम् *er kam darüber nicht zur Gewissheit, ob es der Mond wäre*, BHART. 10, 67. निरचायि यदा भेदो नौषधीनां कूनमता 13, 107. निरचेष्ट CIG. 9, 50. निश्चिन्वते हि ज्ञमन्या यमेवायोग्यम् *entschieden für untauglich halten* RAGA-TAR. 3, 491. 4, 412. अनिश्चित्य भूतिम् *den Lohn nicht festgesetzt habend* JAGN. 2, 194. ततो निश्चित्य मथनम् *beschliessen* R. 1, 43, 19. KATHAS. 4, 107. partic. निश्चित 1) *act. der sich eine feste Meinung über Etwas gebildet hat, der Etwas festgestellt hat, entschlossen*: दशरात्रात्परं केचिदातव्यमिति निश्चिताः SUCR. 2, 409, 5. पुत्रो ऽयमस्माकं सर्वाप्तमिति निश्चिताः R. 1, 38, 24. BHAG. 16, 11. RAGH. 12, 83. R. 1, 63, 6. 3, 48, 2. 63, 15. 4, 44, 80. HARIV. 8334. इति मे निश्चितं विद्धि चेतः 7087. (सेना) असुराणां सहायार्थं निश्चिता 8067. मरणाय निश्चिताम् *fest entschlossen zu sterben* R. 2, 27, 22. तपसे

निश्चितः KATHAS. 4, 134. ज्ञालकर्मणि MBH. 13, 2653. रूपे HARIV. 8069. स्थितं मनः शत्रुवधे — सुनिश्चितम् R. 3, 28, 10. वनवास° 2, 24, 36. अ° *unentschlossen* PANKAT. III, 261. — 2) *pass. entschieden, ausgemacht, festgestellt* AK. 3, 4, 41. 213. अनिश्चितागसि RAGA-TAR. 4, 96. समकृत्स्वपि कृच्छ्रेषु बुद्ध्या निश्चितनिश्चयाः R. 3, 71, 12. अच्युतः किल तोयस्य रसो निश्चयनिश्चितः SUCR. 1, 136, 9. यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितम् BHAG. 2, 7. MUND. UP. 3, 2, 6. हेतुभिः शास्त्रनिश्चितैः MBH. 9, 6. इति मे — निश्चितं मतमुत्तमम् BHAG. 18, 6. सुनिश्चितां मतिं कृत्वा यष्टव्ये R. 1, 8, 3. इति मे निश्चिता मतिः 3, 16, 32. MBH. 3, 7044. N. 26, 6. निश्चितिव हि मे बुद्धिर्वनवासाय R. 3, 22, 36. चित्तपती — बुद्धिं बुद्ध्यानिश्चिताम् HARIV. 10027. इति निश्चितम् *so ist es beschlossen* R. 3, 30, 40. विवाहे निश्चिते KATHAS. 4, 18. CIG. 9, 43. निश्चिततम् MBH. 1, 5545. 2, 561. — 3) *n. Entscheidung, Beschluss*: निश्चितं मनसो हि मे । अयो वापि प्रवृत्त्ये ऽहम् u. s. w. R. 5, 13, 57. — 4) निश्चितम् *adv. bestimmt, gewiss*: करामि PANKAT. 223, 7. — Vgl. निश्चय.

— अभिनिम्, partic. अभिनिश्चित 1) *dem Etwas feststeht, der fest von Etwas überzeugt ist* MBH. 12, 10635. — 2) *feststehend, ausgemacht* MBH. 3, 1086.

— अवनिम् s. अवनिश्चय.

— विनिम् 1) *erwägen*: तेन सार्धं विनिश्चित्य ततः कर्म समारभेत् M. 7, 59. विनिश्चित्य — ब्राह्मणैः MBH. 1, 4136. 3, 2293. विनिश्चित्य वक्रुधा विचार्य च पुनः पुनः 2205. 2345. R. 5, 87, 12. PANKAT. III, 219. अर्थानर्थौ विनिश्चित्य R. 5, 90, 12. MBH. 3, 7019. एतद्बुद्ध्या विनिश्चित्य मनसा 5973. एतां बुद्धिं विनिश्चित्य 14, 330. — 2) *für ausgemacht ansehen, für gewiss halten*: अर्थभावं विनिश्चित्य BHAG. P. 3, 7, 18. — विनिश्चित a) *fest entschlossen zu*: देहत्याग° MBH. 3, 14294. — b) *vollkommen entschieden, festgestellt*: किमिदमथ वा सत्यं विनिश्चितम् AMAR. 47. ब्रह्मसूत्रवैश्वेव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः BHAG. 13, 4. विनिश्चितार्थाद्विरमति धीराः BHART. 2, 72. रिपुनिधनाय विनिश्चितार्थतन्त्रः R. 5, 72, 21. — Vgl. विनिश्चय.

— परि 1) *untersuchen, durchsuchen*: प्रचिन्नु ह्यस्य शाखे द्वे MBH. 3, 2818. पृथिवीं परिचिन्वन्तः R. 4, 47, 1. — 2) *sich mit Etwas vertraut machen, sich an Etwas gewöhnen*: परिचेतुमुपायु धारणाम् RAGH. 8, 18. अभिनयान्परिचेतुमिवोद्यता 9, 29. परिचितं *woran oder an den man sich gewöhnt hat, vertraut, bekannt* CIG. 107. MĀLAV. 10. MEGH. 27, 48. PANKAT. I, 13. 7, 16. 186, 1. 213, 17. 237, 6. RAGA-TAR. 2, 169. 3, 530. हेसाः परिचितां चक्रुस्ताम् *machten mit ihr Bekanntschaft* HARIV. 8615. — Vgl. अपरिचित (ungeprüft), परिचय. — *caus. med. परिचापये suchen* HARIV. Anth. 432, Cl. 13.

— वि 1) *unterscheiden, internoscere*: विचिन्वन्दासमार्थम् RV. 10, 86, 19. AV. 10, 8, 12. चित्तिमचिचितं चिन्वद्धि विद्वान् RV. 4, 2, 11. 10, 89, 3. यदा समर्थं व्यचेदधावा दीर्घं यदात्रिमन्यद्व्यर्धम् 4, 24, 8. ये भूतानि जनयन्तो विचिष्युः (चिकुः oder चाष्युः *zu lesen*) TB. 2, 8, 2, 2. — 2) *machen, dass Etwas unterschieden wird; wahrnehmen lassen, erkennen*: (चन्द्रः) ज्योत्स्नावितानि विचित्य लोकानभ्युत्थितः R. 5, 11, 1. — 3) *besehen, untersuchen, prüfen*: वनस्पतीन्विचिन्वन्तो विनक्षारं सखीवृता MBH. 3, 10323. HARIV. 3730. BHAG. P. 9, 3, 3. एतद्दिनिश्चयम् । विचिन्वन्तु MBH. 3, 6088. कोपप्रसादवस्तूनि ये विचिन्वन्ति सेवकाः PANKAT. I, 42. *durchsuchen*: चेदिपुरीम् — विचिन्वानः MBH. 3, 2660. मही विचेतुम् 8870. मही — अस्माभिर्विचिता 8866. 3, 3517. 13, 4034. R. 2, 93, 19. 3, 68, 9. 12. 19, 70,